ब्रह्माकुमारियाँ सभी को प्रेम, शांति एवं आनंद से जीवन जीने की कला सिखला रही हैं : महामहिम भरत वीर वांचू

(रपट : बी के गिरीश, ज्ञानसरोवर)

आबू पर्वत, ज्ञानसरोवर,२२ जून। न्यायिक प्रक्रिया में बेहतर प्रशासन के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण विषय को लेकर आज ज्ञान सरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ के जूरिस्ट प्रभाग द्वारा एक अखिल भारतीय सम्मेलन का उद्घाटन संपन्न हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन बह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी के अलावा गोवा के राज्यपाल महामहिम भरत वीर वांचू एवं सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश वी गोपाल गौडा , जूरिस्ट प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी रमेश एन शाह तथा अन्य महानुभावों ने दीप प्रज्वलित करके संपन्न किया। आए हुए अतिथियों का स्वागत नृत्य एवं मधुर गीत के द्वारा भी किया गया।

उक्त अवसर पर गोवा के राज्यपाल महामहिम भरत वीर वांचू ने कहा कि मैं आज इस सम्मेलन में शिरकात करके खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।मैं इसके लिए ब्रह्माकुमारीज का गहराई से कृतज्ञ हूँ। आप सभी न्यायविदों एवं अधिवक्ताओं को संबोधित करते हुए मैं स्वयं को काफी आल्हादित महसूस कर राहा हूँ। संस्थान आम व्यक्ति को शांति,प्रेम एवं आनंद से जीने की शिक्षा वर्षो से देता आ रहा है इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। ब्रह्माबाबा की महानता एवं शिक्षाओं केा अपनाकर सभी दादियों एवं दीदियों ने महान सेवा की है। अगर हम सभी अच्छा काम कर सकें अपने दैनिक जीवन में तो संसार सुंदर बन जाएगा। हम एक ऐसे देश में जनमे हैं जहाँ आध्यात्मिकता हर ओर महकती है। अपने इसी बल के आधार पर हमने विदेशी शासकों को देश से भगा दिया। अपना लोकतंत्र कायम किया। न्यायपलिका ने देश को बनाने में महती भूमिका का निर्वाह किया है। हमें अपनी न्यायपालिका पर गर्व है। पूर्व में अनेक न्यायविदों ने राजनीतिज्ञों के रूप में देश की सेवा की है। उत्तम न्याय पालिक आज की मांग है। जैसा कि हमारी न्यायापालिक दर्शा भी रही है। इससे देश में बेहतर विकास हो पाएगा। आज कभी कभी आम व्यक्ति को न्याय नहीं मिल पा रहा है। इसपर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारा महान देश इन कमियों पर पार पा लेगा ऐसा मेरा विश्वास है। सरकार को चाहिए कि वे न्यायपालिका को सशक्त करने की दिशा में कदम उठायें। न्यायपालिका में देरदार स्वीकार नहीं किया जा सकता। न्यायविदों को नैतिकता की धारणा करनी ही होगी ताकि शांति एवं सौहार्द की स्थापनाा की जा सके। जब इसमें कोई कमी होती है तो समस्या आाती है। मूल्यों एवं आध्यात्मिकता की अवहेलना से न्यायपालिका का स्तर नीचे आ सकता है। ब्रह्माकुमारीज ने आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए जो कदम उठाया है वह सराहनीय है। इनकी संस्कृति, स्वागत विधि से मैं एवं मेरी धर्मपत्नी अतिशय प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। इस संस्थान ने समाज सुधार की दिशा में महान कार्य किया है।

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधिपति महामहिम गोपाल गौड़ा जी ने कहा कि हमारे महामहिम गोवा के राज्यपाल महोदय ने हमारी वैचारिक प्रक्रिया को संचालित करने वाला भाषण दिया है। मैं उसे दुहराना नहीं चाहता। उन्होंने कहा कि सम्मेलन में चुना गया यह विषय अत्यंत ही सुंदर है। भारतीय न्यायपालिका विश्व की सुंदरतम न्यायपालिका है। अमेरिका सहित दुनिया के तमाम देश इस बात को मानते हैं। अधिकांश देश ऐसा मानते हैं कि कानून की रक्षा करने में भारतीय न्यायपालिका पूर्णतः सक्षम है। देश की १२५ करोड़ जनता के मानवाधिकारों की रक्षा के लिए यहाँ की न्यायपालिका ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। ऐसा आध्यात्मिक सशक्तिकरण की वजह से ही संभव हो पाता है। न्यायाधिशों एवं अधिवक्ताओं को देश की जनता का रक्षक बन कर उनकी मदद करनी होगी। ५८ प्रतिशत गरीब जनता का सहायक कौन होगा? सरकार कितना कर पाएगी? आध्यात्मिक रूप से सशक्त न्यायपालिका एवं सहयोगी ही ऐसा कर पाएंगे। महिला अधिकारों की उन्होंन विस्तार से चर्चा की। उसके लिए संविधान में प्रदत्त धाराओं के बारे में बताया। अफसोस जाहिर किया कि बहनों एवं माताओं को आज भी अधिकार नहीं दिये जा रहे हैं। जिन्हें हम देवियाँ कहते हैं उन देवियों के अधिकारों को छीना जा रह है। इसका प्रतिकार अवश्य किया जाना चाहिए। बार काउंसिल के सदस्यों एवं न्यायाधिशों को इसपर विचार करना होगा। बाराबरी का अधिकार दिलाना ही आध्यात्मिकता है। यहाँ कसाब जैसे आतंकवादियों को भी मानवाधिकार मिलता है फिर हमारी माताओं बहनों को क्यों नहीं ? आध्यात्मिकता को अपनाने का एक वैकल्पिक मंत्र देते हुए महामहिम ने कहा कि सामाजिक कल्याण के लिए काम करना ही आध्यात्मिक होना है। गरीबों दलितों एवं बेसहारा लोगों की समस्याओं को आवाज देना भी आध्यात्मिकता है। ईमानदारी से अपना काम करना भी आध्यात्मिकता ही है। गौड़ा जी ब्रह्माकुमारीज की भूरि भूरि प्रशंसा की कि आपने इतनी सुंदर व्यवस्था की है कि शब्दों में इसका वर्णन करना असंभव है।

न्यायविद् प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी भ्राता रमेश शाह जी ने अध्यक्षीय उद्बोधन के क्रम में कहा कि आबू अब्बा कर घर यानि हम सभी के परमपिता का घर है। यहाँ हम सभी आध्यात्मिकता को अपनाने का गुर सीखेंगे। अभी हमें विस्तार को सार में समाना है। यह संस्थान हमें यही सिखाता है। सभी बातों को बिंदू रूप में बीज रूप में समझना ऐसा है कि काम क्रोध लोभ मोह एंव अहंकार को समाप्त करना ही आध्यात्मिकता है। ऐसा नहीं कर पाएंगे तो विभिन्न अवसरों पर हम फेल कर जाएंगे। अष्ट शक्तियों को अपनाने से ही जीवन में महानता आती है। यही आध्यात्मिक सशक्तिकरण है। परमात्मा हम सभी बच्चों से पवित्र दुनियाँ की स्थापना का काम करवा रहे हैं। आप सभी को भी इसमें सहयोगी बनना है। मानवीय समस्याओं से निजात पाने के लिए आध्यात्मिकता केा अपनाना जरूरी है। उसे अवश्य सीखें। अभी नहीं तो कभी नहीं।

भ्राता ब्रह्माकुमार बी एल माहेश्वरी, जोधपुर उच्च न्यायालय के अधिवक्ता ने स्वागत भाषण देते हुए एक सत्य सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि न्यायिक प्रक्रिया में बिना आध्यात्मिक सशक्तिकरण के उत्तम प्रशासन मुश्किल होगा।

सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता ब्रह्माकुमार भ्राता जयप्रकाश जी ने सम्मेलन का लक्ष्य स्पष्ट करते हुए कहा कि आज की आवश्यकता है कि सभी का आध्यात्मिक सशक्तिकरण अवश्य से अवश्य किया जाना चाहिए। उन्होंने आए हुए अतिथियों से अनुरोध किया कि उन्हें यहाँ के सभी कार्यक्रमों में अवश्य से अवश्य शामिल होना चाहिए क्योंकि सम्मेलन का सारा कार्यक्रम इस प्रकार से आयोजित किया गया है जो आध्यात्मिक सशक्ति करण के लिए काफी काफी आवश्यक है।

उड़ीसा उच्च न्यायालय के पूर्व माननीय न्यायाधीश एवं उड़ीसा शासन के लोक शिकायत निवारण समिति के अध्यक्ष भाई आर एन विस्वाल ने कहा कि सबसे पहले ईश्वर ने यह दुनियाँ एवं प्रकृति का निर्माण किया और उसके बाद अपने जैसे मनुष्यों को बनाया। अतः खुश रहना एवं सुखी रहना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। एक अशांत मस्तिष्क न्याय नहीं कर पाएगा। अतः यह सभी का दायित्व है कि शांति अपनाया जाए। मन यहाँ वहाँ भटकता रहता है। मन को नियंत्रण में रखना असंभव जैसा है। नींद में भी स्वप्न के रूप में हमारी परेशानियाँ हमारे सामने आती हैं। मगर प्रयत्न के आधार पर हम इसपर नियंत्रण कर सकते हैं। इस संस्थान में हमें ईश्वर से संपर्क साधने की विधि बताई गई है। उसका अभ्यास करके हम मन को नियंत्रण में कर पाएंगे और स्वयं का सशक्तिकरण कर लेंगे। तब न्यायिक प्रक्रिया स्वच्छ हो सकेगी।

दिल्ली से पधारीं ब्रह्माकुमारी पुष्पा बहन ने अतिथियों को राजयोग का मर्म समझाया और इसका अभ्यास भी करवाया।

भरतपुर के भाई अमर सिंह जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मुख्यालय संयोजिका, न्यायविद् प्रभाग, राजयोगिनी लता बहन ने कार्यक्रम का संचालन किया।